ISSN:2583-8849



जीनस कँवर

राजस्थान

राग भैरवी

सभी जानते हैं भैरवी जगत के
नृत्य प्रमुख शिव की संगिनी है

देवी की तरह ही भैरवी राग भी
अस्थिर चंचल मन की राग है

कभी यह वियोगिनी तो
कभी प्रेम पुजारिन
कभी अप्सरा सी
हृदय के तार छेड़ती सी
मालूम पड़ती है

ऐसे में राग भैरवी को
गाते बजाते हुए
मैं बेहद कोमलता से
हर सुर का स्पर्श करती हूं
तब राग धीरे धीरे मुझे
अपने प्रभाव की
परिधि समेट में लेता है
अपनी लयकारी
पलटों में यह राग
आकर्षक लगता है

गहनता में आंखें मूंदती हूं तो
खुद को आभा मंडल में
स्वत: ही घिरा पाती हूं

अनुभूत होता है जैसे
एक झीना आलोक
मुझे आगोश में लेता है
एक असीम आह्लाद
मन में उतरता जाता है

अभिव्यक्ति में वर्णित
न कर पाने की
लाचारता अलग से

तब घंटों तानपुरे संग
सुर विस्तार करने से
भान ही नहीं रहता
कि जानें कब
भैरवी थिरकती हुई
सामने प्रकट हो जाती है

चक्षु से अश्रु अविरल
बहने लगते हैं
जिव्हा भारी,पर गूंज
हर तरफ स्पष्ट सुनाई देती है

आभार ,आभार ,आभार
हे शिव अपनी प्रिया से
मुझ अज्ञानी को
मिलाने के लिए
तुम्हारा आत्मीय आभार

इधर मैं तत्पर हस्त पुष्प लिए
नतमस्तक पर नयन हैं कि
पलकें खोलने को
बिल्कुल नहीं हैं राजी ...